ASTRO ARPITA NATH

अल्पायु / लघु जीवनकाल - केस स्टडी

Arpita Nath द्वारा · केस स्टडीज़ · 2026-09-18

अल्पायु (कम आयु की श्रेणी, जिसे शास्त्रीय वैदिक ग्रंथों में पारंपरिक रूप से लगभग 32–36 वर्ष तक माना गया है) का आंकलन करने के लिए लग्न (जीवन शक्ति/शरीर), लग्नेश, अष्टम भाव (दीर्घायु), अष्टमेश, शनि (आयुष्कारक) और शास्त्रीय तीन-जोड़ी दीर्घायु विधियों का विश्लेषण करना आवश्यक होता है।

1. इस कुंडली में प्रमुख ग्रह स्थितियां

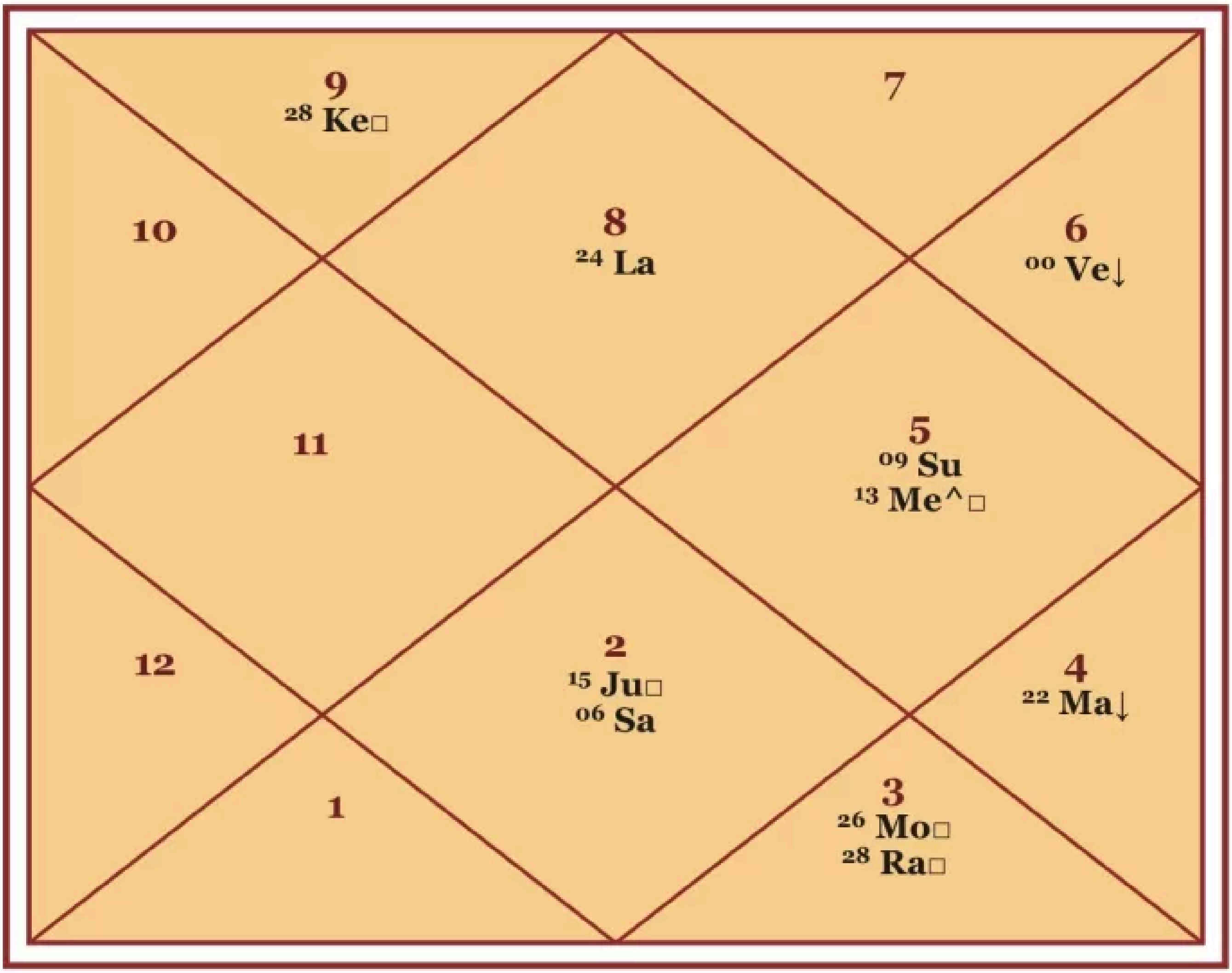

• **लग्न (Ascendant):** वृश्चिक (राशि 8), 24° पर।

• **लग्नेश:** मंगल (Ma), कर्क राशि (राशि 4) में 9वें भाव में स्थित।

• **लग्नेश की स्थिति:** मंगल कर्क राशि में 22° पर नीच (Debilitated) है।

• **अष्टम भाव (दीर्घायु/आयु भाव):** मिथुन (राशि 3)।

• **अष्टमेश:** बुध (Me), 10वें भाव (सिंह राशि) में सूर्य के साथ युति में/अस्त (combust)।

• **अष्टम भाव में ग्रह:** मिथुन राशि में चंद्रमा (Mo) + राहु (Ra) की युति (अंश निकट: चंद्रमा 26° पर, राहु 28° पर)।

• **दीर्घायु के कारक (आयुष कारक):** शनि (Sa), वृषभ राशि (7वें भाव, एक मारक भाव) में बृहस्पति के साथ स्थित।

• **जीवन शक्ति/प्राण के कारक (सूर्य):** 10वें भाव में अपनी स्वराशि (सिंह) में स्थित।

2. "अल्पायु" (कम आयु) के आधार का समर्थन करने वाले कारक

शास्त्रीय ग्रंथ (जैसे कि बृहत् पराशर होरा शास्त्र और जैमिनी उपदेश सूत्र) ऐसे विशिष्ट योगों का उल्लेख करते हैं जो शारीरिक जीवन शक्ति को क्षीण करते हैं और कम आयु वर्ग की ओर संकेत करते हैं:

***नीच का लग्न स्वामी (मंगल):**

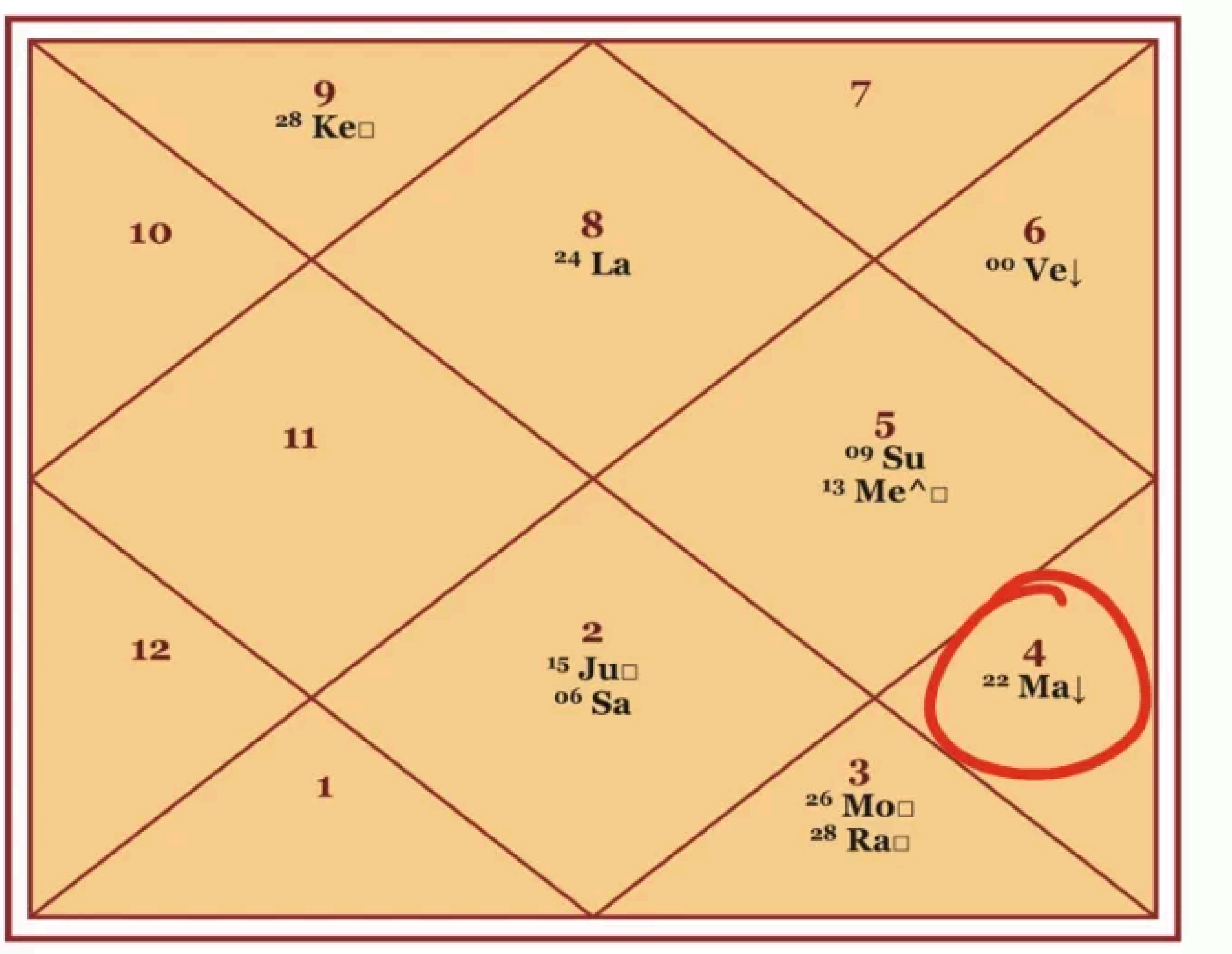

• शारीरिक गठन और प्राण शक्ति का मुख्य आधार (लग्नेश मंगल) कर्क राशि में अपनी नीच राशि में स्थित है। एक कमजोर या नीच का लग्नेश बड़े अशुभ गोचरों और कठिन दशा अवधियों के दौरान भौतिक शरीर को बनाए रखने के लिए संघर्ष करता है।

***अष्टम भाव का गंभीर रूप से पीड़ित होना (चंद्र + राहु / ग्रहण योग):**

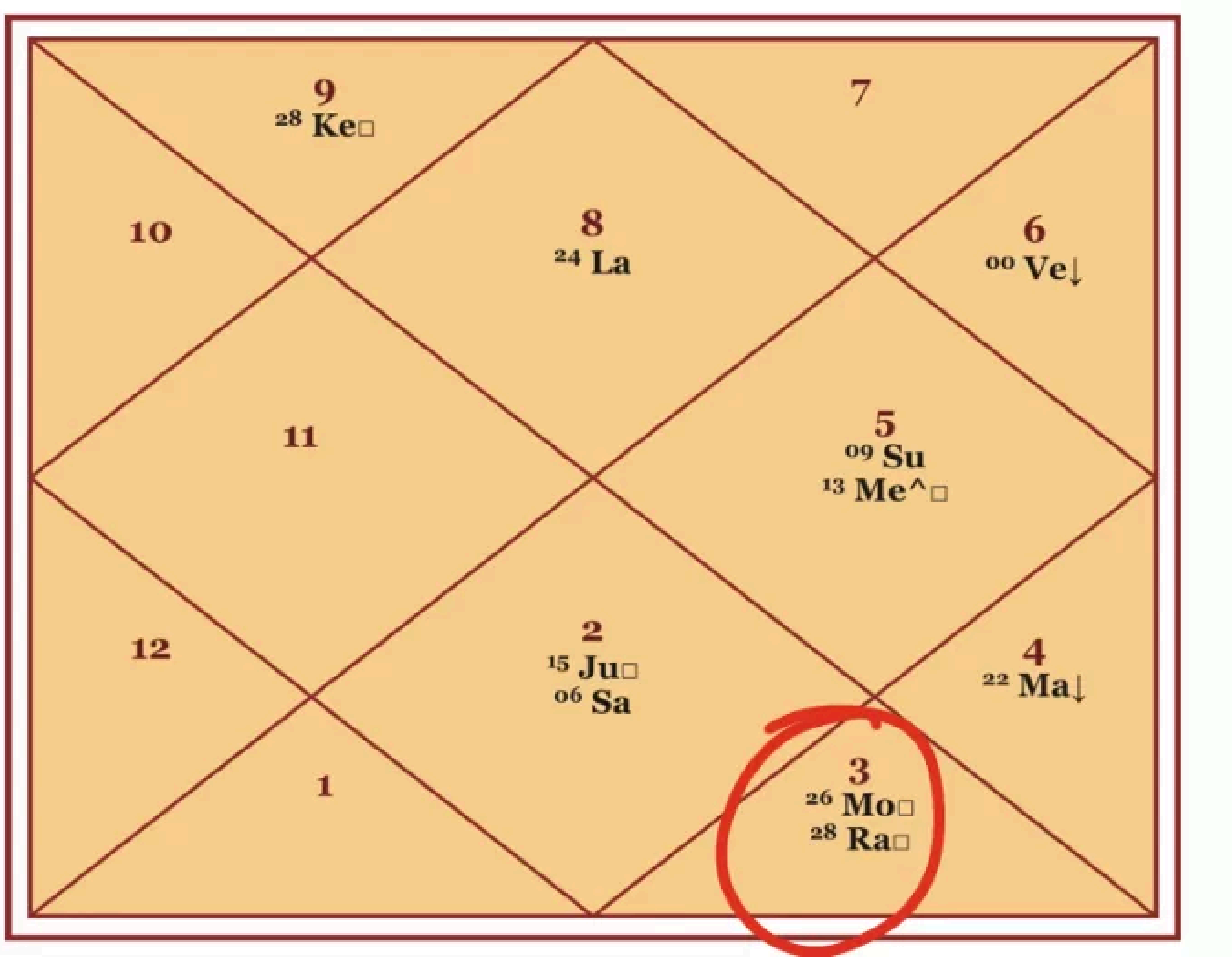

• अष्टम भाव आयु, दीर्घकालिक दुर्बलता और दुर्घटनाओं का नियंत्रण करता है।

• यहाँ, चंद्रमा राहु के साथ 2° के भीतर एक सटीक युति में स्थित है (चंद्रमा 26° पर, राहु 28° पर)। यह आयु के भाव में एक घनिष्ठ ग्रहण योग बनाता है, जिससे अत्यधिक मानसिक और शारीरिक संवेदनशीलता, अचानक स्वास्थ्य संकट या जल/विष/दुर्घटना से जुड़े खतरे उत्पन्न होते हैं।

***दोनों मारक भाव (द्वितीय और सप्तम) अत्यधिक सक्रिय:**

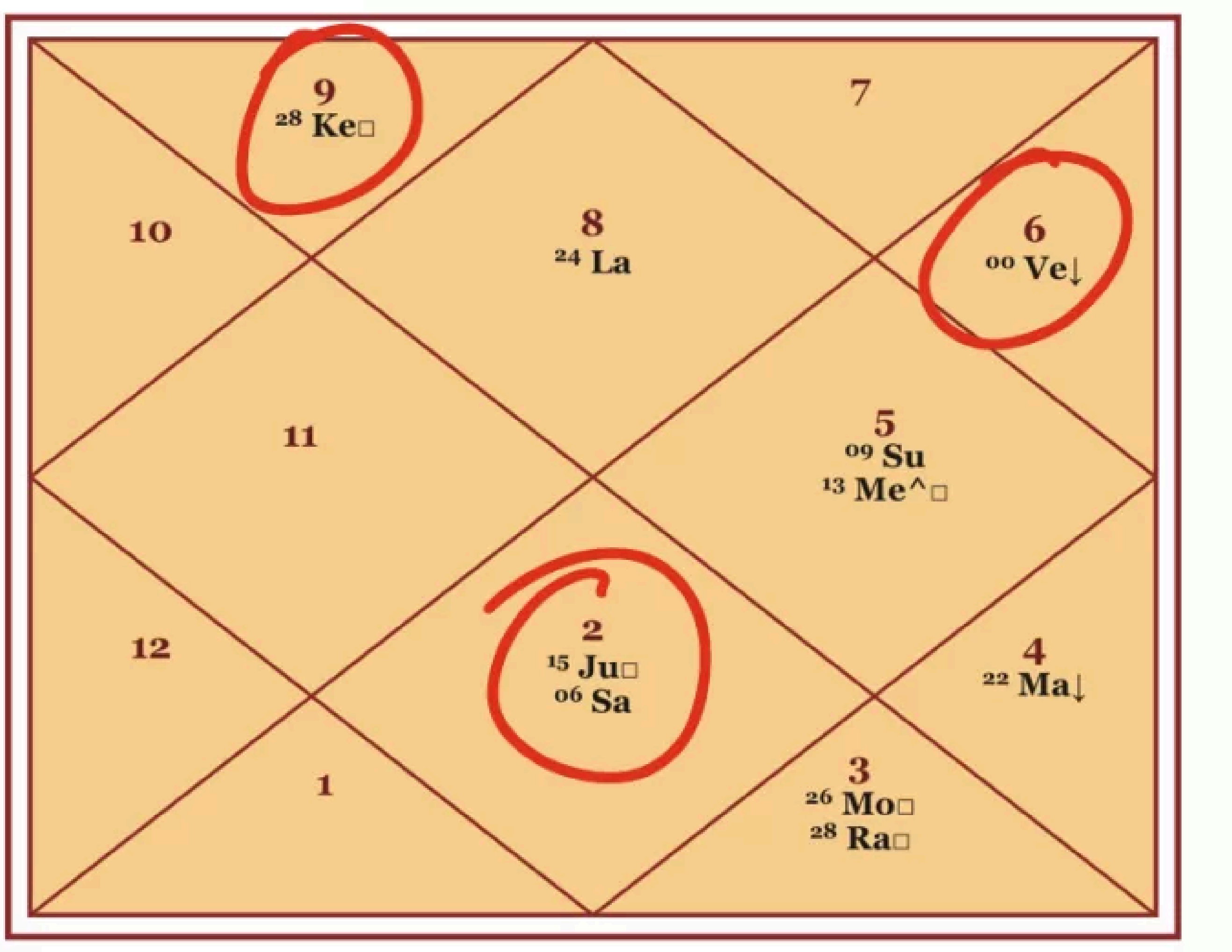

• **द्वितीय भाव (धनु राशि):** 28° पर केतु द्वारा अधिष्ठित है।

• **सप्तम भाव (वृषभ राशि):** बृहस्पति (मृत्यु/मारक का द्वितीयेश) के साथ शनि (एक स्वाभाविक मृत्यु कारक और तृतीय/चतुर्थ भाव का मारक स्वामी) द्वारा अधिष्ठित है। सप्तम भाव में बैठा शनि एक प्रबल कार्यात्मक मारक के रूप में कार्य करता है।

• **नीच का शुक्र:** जीवन-रक्षक अमृत (संजीवनी शक्ति) का प्रतिनिधित्व करने वाला शुक्र, कन्या राशि (एकादश भाव) में 00° पर नीच का होकर बैठा है, जिससे मजबूत पुनर्स्थापनात्मक जीवन शक्ति प्रदान करने की इसकी क्षमता कम हो जाती है।

3. शास्त्रीय त्रिसूत्रीय आयु निर्धारण (जैमिनी / पराशर)

राशियों के प्रकार (चर, स्थिर, द्विस्वभाव) का उपयोग करने वाले शास्त्रीय गणितीय परीक्षण में:

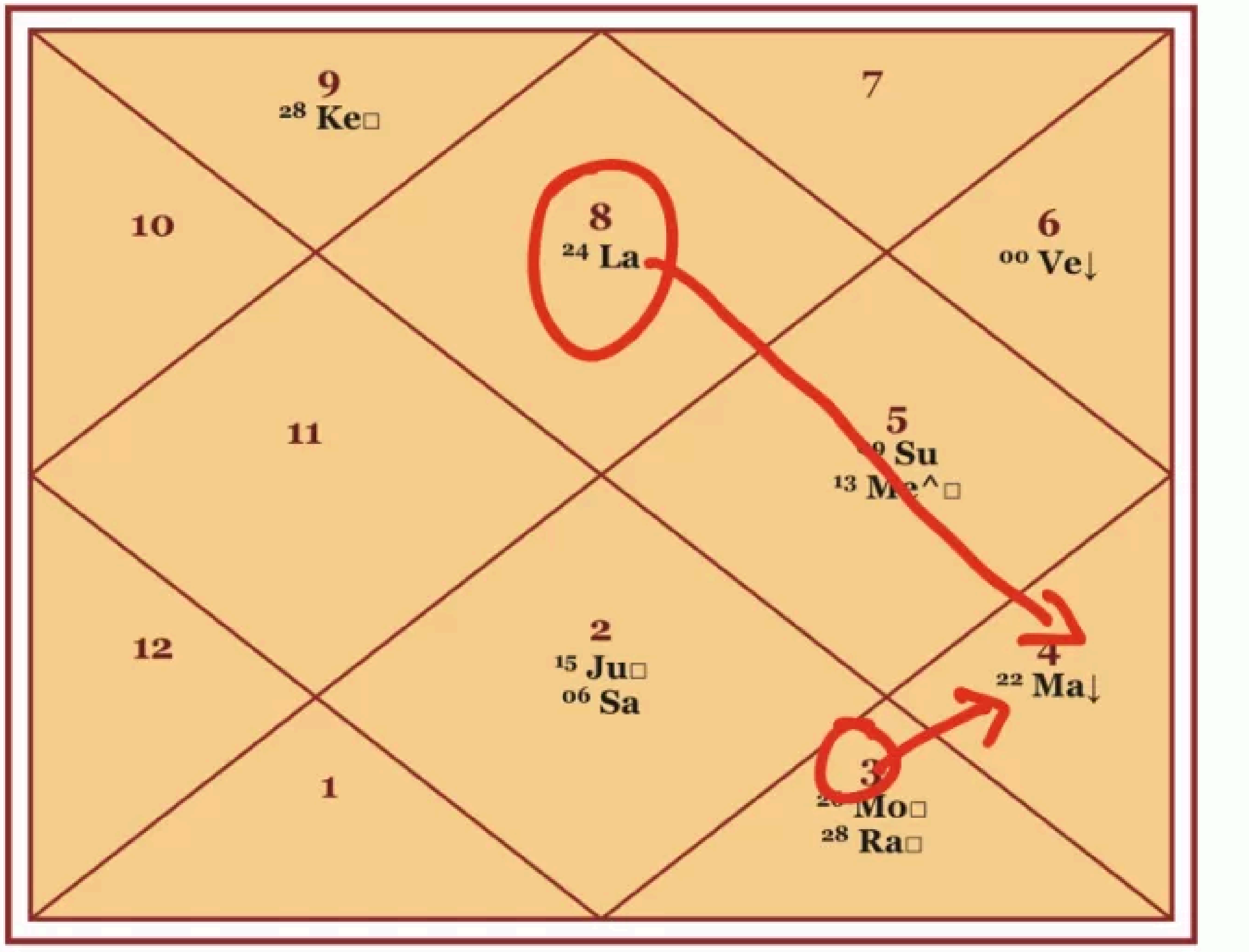

लग्नेश और अष्टमेश:
मंगल (कर्क) और बुध (सिंह)
चर + स्थिर
मध्यायु (मध्यम)

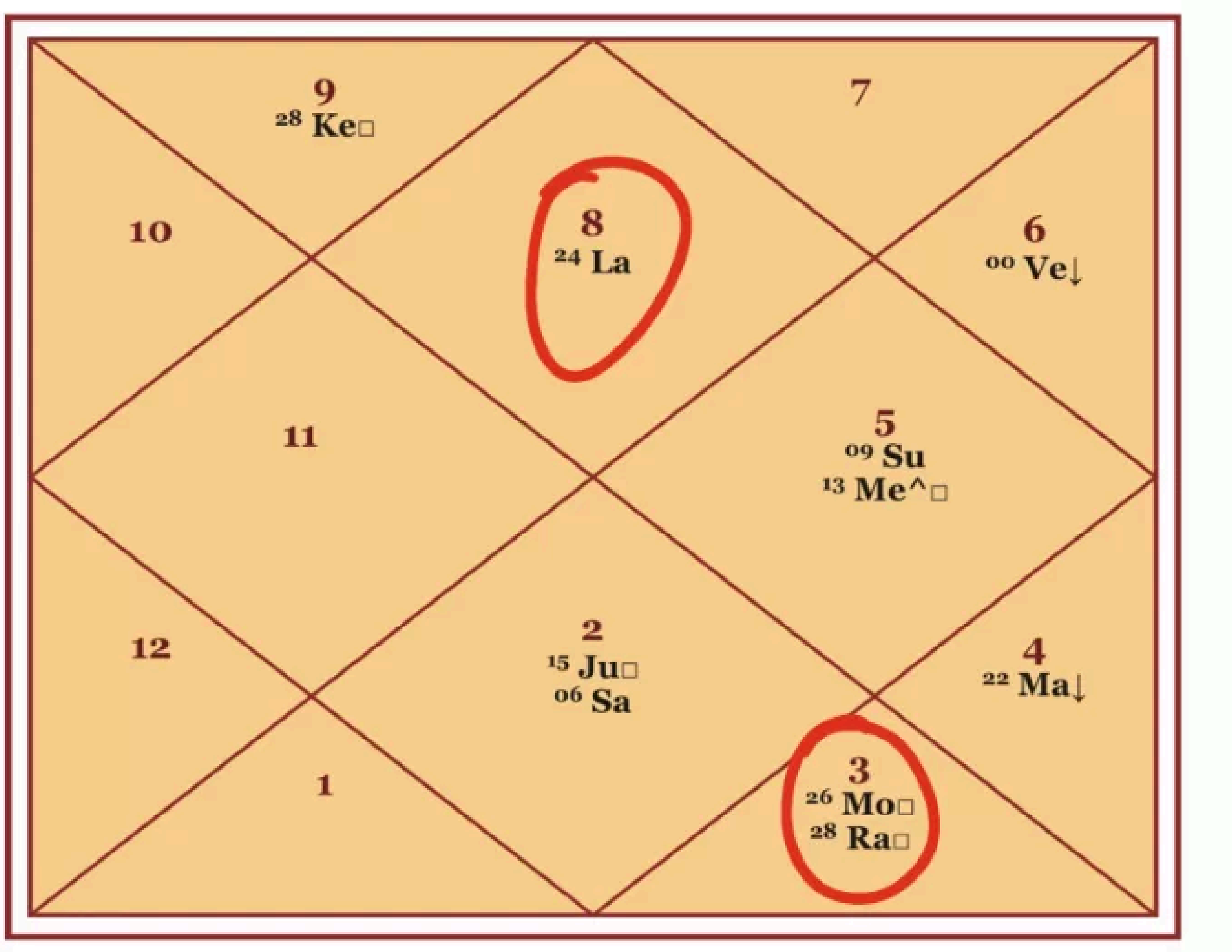

लग्न और चंद्रमा:
वृश्चिक और मिथुन
स्थिर + द्विस्वभाव
अल्पायु (कम)

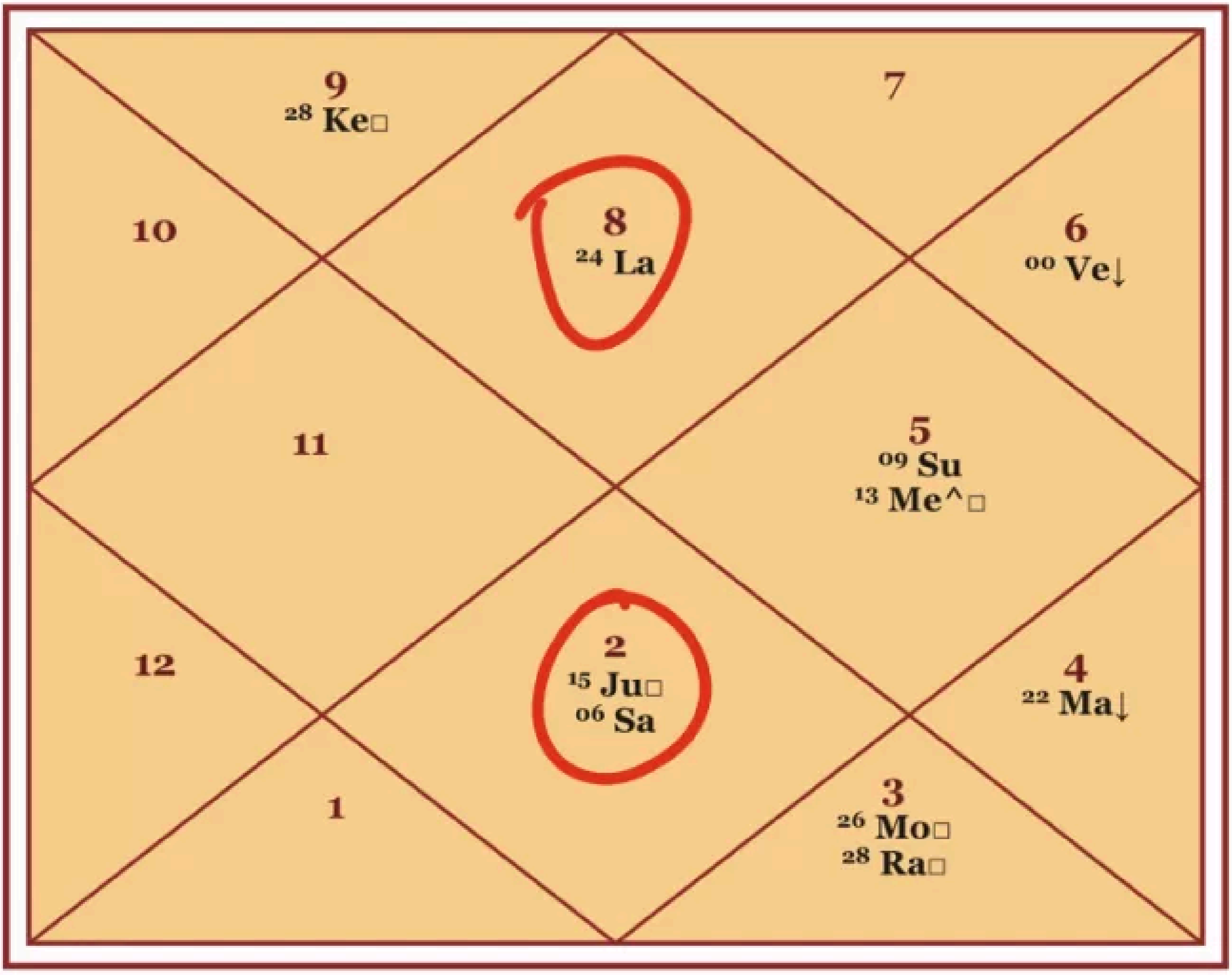

लग्न और शनि:
वृश्चिक और वृषभ
स्थिर + स्थिर
अल्पायु (कम)

चूँकि तीन प्राथमिक युग्मों में से दो अल्पायु का संकेत देते हैं, इसलिए शास्त्रीय नियम आरंभिक रूप से इस कुंडली के बुनियादी आधार को अल्पायु (कम जीवन) की श्रेणी में वर्गीकृत करते हैं।

4. संतुलनकारी कारक (जीवन को दीर्घायु बनाने वाले योग)

यद्यपि मूलभूत संकेतक अल्पायु की ओर संकेत करते हैं, फिर भी किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले एक ज्योतिषी को उन कारकों की जाँच अवश्य करनी चाहिए जो जीवन की रक्षा करते हैं या उसे बढ़ाते हैं:

• **दसवें भाव में सूर्य स्वराशि (सिंह) में:** सूर्य (आत्मा, जीवन शक्ति और हृदय का कारक) अपनी ही राशि में अत्यंत बली है और किसी भी पाप दृष्टि से मुक्त है, जो शरीर को मजबूत रोग-प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है।

• **बृहस्पति की लग्न पर दृष्टि:** बृहस्पति वृषभ राशि (सातवें भाव) में स्थित है और सीधे लग्न (वृश्चिक) पर अपनी पूर्ण सातवीं दृष्टि डाल रहा है। लग्न पर बृहस्पति की दृष्टि को अकाल मृत्यु (अपमृत्यु) के विरुद्ध सबसे प्रमुख सुरक्षा ढालों (रक्षा कवच) में से एक माना जाता है।

• **शनि की स्वाभाविक भूमिका:** यद्यपि शनि मारक भाव में स्थित है, फिर भी आयु कारक के रूप में शनि सामान्यतः जीवन काल की रक्षा करता है, जब तक कि उस पर प्रत्यक्ष शत्रुओं की दृष्टि न हो।

यह कुंडली अल्पायु के शास्त्रीय संकेतकों को स्पष्ट रूप से दर्शाती है (नीच के लग्नेश, चंद्रमा-राहु की घनिष्ठ युति से पीड़ित आठवें भाव, और तीन शास्त्रीय राशि-युग्म सूत्रों में से दो द्वारा अल्पायु की ओर संकेत करने के कारण)। हालांकि, लग्न पर बृहस्पति की सीधी दृष्टि और दसवें भाव में बली सूर्य एक महत्वपूर्ण संतुलनकारी शक्ति प्रदान करते हैं, जो अक्सर जीवन काल को उस सीमा के उच्च स्तर की ओर ले जाते हैं या संकटपूर्ण अवधियों को टालने के लिए विशिष्ट उपायों की मांग करते हैं।

*चट्टान से नीचे गिरने की एक घातक दुर्घटना के कारण 26 वर्ष की आयु में जातक का निधन हो गया।

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।